SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

नये जमाने की मुकरीः पुनर्जागरण काल में पुनरुद्धार और प्रयोग

रीता कुमारी, पीएच–डी, हिन्दी विभाग
किशोरी सिन्हा महिला महाविद्यालय, औरंगाबाद, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
रीता कुमारी, पीएच–डी
E-mail : rita001983@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 18/05/2026
Revised on : 19/07/2026
Accepted on : 28/07/2026
Overall Similarity : 00% on 20/07/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Jul 20, 2026 (02:23 PM)
Matches: 0 / 3144 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

हिंदी साहित्य में मुकरी विधा का इतिहास अत्यंत रोचक है। यह विधा मूलतः लोक–संस्कृति से जुड़ी रही है, जिसे साहित्य की मुख्यधारा में लाने का श्रेय अमीर खुसरो को जाता है। मुकरी विधा में अमीर खुसरो का नाम सर्वोपरि है। मुकरी को एक साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने का श्रेय इन्हीं को जाता है। खुसरो ने मुकरी को जन–भाषा (हिन्दवी) में लिखकर उसे आम जनता की भाषा बनाया। उन्होंने सखी को संबोधित करके संवाद की जो शैली अपनायी, वह आज भी मुकरी का मानक मानी जाती है। उनकी मुकरियों में तत्कालीन समाज, स्त्री–पुरुष संबंधों और दैनिक जीवन के दृश्यों का अद्भुत ताना–बाना है, जिसका प्रमुख उद्देश्य है – लोक–रंजन और सौंदर्य। अमीर खुसरो के बाद मुकरी विधा का कोई संगठित इतिहास तो नहीं मिलता, किंतु यह विधा लोक–परंपरा के रूप में जीवित रही। भक्ति और रीतिकाल के दौरान, कवियों ने इसका प्रयोग औपचारिक साहित्यिक विधा के बजाय कौतुक या मनोरंजन के लिए किया तो कुछ फुटकर कवियों ने मुकरी का प्रयोग श्रृंगारिक व्यंग्य के लिए किया, लेकिन खुसरो जैसी लोकप्रियता किसी को प्राप्त नहीं हुई। आधुनिक काल में भारतेन्दु युग में लोक–विधाओं के प्रति पुनः आकर्षण बढ़ा। भारतेन्दु जी ने हिंदी साहित्य की विभिन्न लोक–विधाओं को पुनर्जीवित किया। उन्होंने मुकरियों को एक बार फिर से जनमानस के बीच लोकप्रिय बनाया। उनकी मुकरियों में देशप्रेम, सामाजिक कुरीतियों पर व्यंग्य और आधुनिक जीवन की विसंगतियों का पुट मिलता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतेन्दु हरिश्चंद्र की रचना नये जमाने की मुकरी का गहन अध्ययन और विश्लेषण इस बात की ओर रेखांकित करता है कि उन्होंने पुनर्जागरण काल में मुकरियों की रचना कर, कैसे मुकरी विधा का पुनरुत्थान किया। नये जमाने की मुकरी में मुकरी का कलेवर तो वही है, परन्तु उन्होंने उसकी आत्मा पूरी तरह बदल डाली। उसे लोक–रंजन से उठाकर लोक–संवेदना और लोक–समस्याओं से जोड़ दिया। नये जमाने की मुकरी तत्कालीन औपनिवेशिक, राजनीतिक और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ देखन में छोटन लगे, घाव करे अति गंभीर! या फिर छोटा पैकेट, बड़ा धमाका! जैसा ही था। इस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र

ने पुनर्जागरण काल में मुकरी के कथ्य एवं उद्देश्य को परिवर्तित करने का नवीन प्रयोग कर, मुकरी विधा का पुनरुद्धार कर दिया।

मुख्य शब्द

मुकरी, लोक–रंजन, लोक–संवेदना, लोक–समस्या, पुनर्जागरण, सामाजिक चेतना, राजनीतिक जागरण.

प्रस्तावना

मुकरी का इतिहास ''लोक से साहित्य तक'' की एक सफल यात्रा है। अमीर खुसरो जहाँ इसके ''प्रवर्तक'' हैं, वहीं भारतेन्दु हरिश्चंद्र इसके ''पुनरूद्धारक''। अमीर खुसरो और भारतेन्दु हरिश्चंद्र की मुकरियों में ''सामाजिक चेतना'' का अंतर अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अंतर केवल कालखंड का नहीं, बल्कि रचनाकार के ''दृष्टिकोण'' और ''युग–बोध'' का है।

''मुकरी'' शब्द का अर्थ है –''मुकरना'', अर्थात् ''अस्वीकार करना''। संरचनात्मक दृष्टि से मुकरी एक पहेलीनुमा काव्य रूप है, जिसमें कवि तीन पंक्तियों में किसी वस्तु या व्यक्ति का ऐसा वर्णन करता है जिससे जिज्ञासा चरम पर पहुँच जाए, किंतु चौथी पंक्ति में वह चपलता के साथ दिए गए लक्षणों से मुकर जाता है। कवि पहले ऐसी स्थिति पैदा करता है कि लगे कि उत्तर ''पति'' या ''प्रियतम'' है, लेकिन अंतिम पंक्ति में वह अपनी बात से मुकरकर किसी निर्जीव वस्तु या अन्य का नाम ले लेता है।

इसकी शैली संवादधर्मी होती है। इसमें एक पक्ष (सखी) प्रश्न करता है और दूसरा पक्ष (कवि/वक्ता) चतुर जवाब देता है। यह विधा अपनी संक्षिप्तता, गेयता और वाक–चातुर्य के लिए जानी जाती है, जहाँ शब्दों का अर्थ–विस्तार श्रोता को बौद्धिक आनंद प्रदान करता है। उदाहरण–स्वरूप अमीर खुसरो और भारतेन्दु हरिश्चंद्र की एक–एक मुकरी प्रस्तुत है:

''वह आवे तब शादी होय,उस बिन दूजा और न कोय।
मीठे लागें वाके बोल,ए सखी साजन? ना सखी ढोल।'' (अमीर खुसरो)

''इनकी उनकी खिदमत करो, रुपया देते देते मरो।
तब आवै मोहि करन खराब, क्यों सखि साजन, नहिं खिताब।'' (भारतेन्दु हरिश्चंद्र)

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने जब ''नवजागरण'' का सूत्रपात किया, तब उन्होंने साहित्य को जन–जन तक पहुँचाने के लिए लोक–विधाओं की ओर पुनः मुड़ने का आह्वान किया। भारतेन्दु ने न केवल प्राचीन परंपराओं का अन्वेषण किया, बल्कि उन्हें आधुनिक संवेदनाओं के अनुरूप ढालने का प्रयास भी किया। भारतेन्दु ने खुसरो की मुकरी शैली को पुनर्जीवित किया और ''सखी–संवाद'' की उस पुरातन शैली को चुना, जिससे जनता पहले से ही परिचित थी, ताकि वे अपनी राष्ट्रीय चेतना और सुधारवादी विचारों को सहजता से लोगों के हृदय तक पहुँचा सकें।

भारतेन्दु ने खुसरो के ''ढाँचे'' (सखी–संवाद शैली) को तो अपनाया, लेकिन उसमें ''युगीन संवेदना'' का नया रंग भर दिया। उनकी मुकरियाँ ''चेतना का आह्वान'' हैं, जो समाज की रुग्णताओं पर चोट करती हैं। उन्होंने मुकरी को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे ''अस्त्र'' बनाया। उनकी मुकरियों में गरीबी, ब्रिटिश दासता, धार्मिक पाखंड और सामाजिक कुरीतियों का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। वे एक ''समाज–सुधारक'' के रूप में लिखते हैं। उनकी मुकरियों में व्यंग्य तीखा और उद्देश्यपूर्ण है। वे पाठक को हंसाने के साथ–साथ ''झकझोरने'' का काम करते हैं।

नये जमाने की मुकरियाँ: राष्ट्रीय जागरण और सामाजिक सुधार की कड़ियाँ

भारतेन्दु हरिश्चंद्र की मुकरियाँ केवल काव्य–कला का नमूना नहीं हैं, बल्कि वे 19वीं शताब्दी के भारतीय समाज का एक ''व्यंग्य–दस्तावेज़'' हैं। उन्होंने अपनी मुकरियों का उपयोग तत्कालीन राजनीतिक–सामाजिक परिवेश में व्याप्त जड़ता, धार्मिक पाखंड और शोषण के विरुद्ध एक ''अस्त्र'' के रूप में किया। पुनर्जागरण काल में उन्होंने नये जमाने की मुकरियों के ''कथ्य'' को तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों से जोड़कर जो नवीन प्रयोग किये, उसने सचमुच मुकरी विधा का पुनरुद्धार किया। भारतेन्दु द्वारा किये गये पुनरुद्धार के प्रयोग की इन कड़ियों को निम्नलिखित कथ्यों के साथ को इस प्रकार पिरोया जा सकता है:

धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास पर प्रहार

भारतेन्दु का समाज अंधविश्वास और ढकोसलों से जकड़ा हुआ था। उन्होंने धर्म के नाम पर शोषण करने वाले पाखंडियों को अपनी मुकरियों का लक्ष्य बनाया।

''भैंस भेष करि दंभ दिखावै,पाप करै और जग डरावै।
नाम धरै धर्मी को भारी,क्यों सखि साजन? नहिं सखि, ढोंगी पुजारी।''

यहाँ कवि ने ''ढोंगी पुजारी'' के बाहरी आचरण और आंतरिक कुटिलता को ''भैंस के भेष'' (पशुवत आचरण) से जोड़कर समाज को सजग किया है। उनका तर्क था कि जब तक हम स्वयं के भीतर के ''पाखंड'' को नहीं मारेंगे, तब तक हम विदेशी शासन का विरोध नहीं कर पाएँगे।

काहू के घर में नाहीं चौन, रात–दिन व्याकुल रहै नैन।
अति ही जिय में है कलैज, क्यों सखि साजन? नहिं सखि ''स्वार्थ''।

जिसके कारण सब जग सोय, ताके कारण जग में रोय।
सदा करै वह जिय में राज, क्यों सखि साजन? नहिं सखि ''लोभ''।

सदा रहे जो मन में फूल, समझै नहीं अपनी कोई भूल।
बड़ी बुराई है उसकी ओर, क्यों सखि साजन? नहिं सखि ''अहंकार''।

नारी शिक्षा और सामाजिक कुरीतियाँ

उस काल में स्त्री–शिक्षा का अभाव और बाल–विवाह जैसी कुरीतियाँ समाज का मुख्य अभिशाप थीं। भारतेन्दु ने इन पर बड़ी मर्मस्पर्शी टिप्पणियाँ की हैं।

''पढ़त नहीं और सब गुन जानै,जहँ तहँ सखियन में इतरावै।
घर के काज सबै वह करै,क्यों सखि साजन? नहिं सखि, अशिक्षित नारी।''

यहाँ नारी के कौशल को तो स्वीकार किया गया है, लेकिन शिक्षा के अभाव में जो ''इतराना'' (व्यर्थ का अहंकार) है, उस पर प्रहार कर शिक्षा की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

तत्कालीन आर्थिक शोषण और रिश्वतखोरी

भारतेन्दु ने प्रशासनिक भ्रष्टाचार को जिस पैनेपन से मुकरियों में उतारा है, वह अद्‌भुत है। रिश्वतखोरी को उन्होंने ''साजन'' के रूपक से जोड़ा, जो पाठक को एक झटके में वास्तविकता का दर्शन कराता है।

धन लेकर कछु काम न आव, ऊँची नीची राह दिखाव।
समय पड़े पर सीधे गुंगी, क्यों सखि साजन, नहिं सखि चुंगी।''

''मुँह जब लागे तब नहिं छूटे,जाति मान धन सब कुछ लूटे।
पागल कर मोहे करे खराब,क्यों सखि साजन? नहिं सखि, रिश्वत साहब।''

रिश्वतखोरी की लत कैसे एक सभ्य समाज और उसके नैतिक मूल्यों को नष्ट कर देती है, इस पर यह व्यंग्य है। सखी पूछती है कि वह कौन है जो मुँह लग जाने पर नहीं छूटता? वह कहती है कि यह ''साजन'' नहीं, बल्कि ''रिश्वत'' है। जो व्यक्ति एक बार रिश्वत का आदी हो जाता है, उसकी जाति, सम्मान और धन सब नष्ट हो जाते हैं। यह व्यक्ति को विवेकहीन (पागल) कर देती है। इस मुकरी में ''साजन'' का भ्रम तोड़कर ''रिश्वत'' पर प्रहार करना यह दर्शाता है कि भ्रष्टाचार किस प्रकार समाज की नैतिक नींव को खोखला कर रहा था।

अँग्रेजी शिक्षा और ''बाबू'' संस्कृति पर व्यंग्य

भारतेन्दु अंग्रेजी शिक्षा को ज्ञान का माध्यम न मानकर, अपनी जड़ों से काटने वाला एक ''औपनिवेशिक षड्यंत्र'' मानते थे। उनके अनुसार ''नयापन'' के नाम पर जो पश्चिमी जीवनशैली, अंग्रेजी शिक्षा और रीति–रिवाज भारत में थोपे जा रहे थे, वे वास्तव में भारतीय संस्कृति के विनाश के लिए थे।

''सब गुरुजन को बुरो बतावै, अपनी खिचड़ी अलग पकावै।
भीतर तत्व न झूठी तेजी, क्यों सखि साजन, नहिं अँगरेजी।''

''तीन बुलाए तेरह आवैं, निज निज बिपदा रोइ सुनावैं।
आँखौं फूटे भरा न पेट, क्यों सखि साजन, नहिं ग्रैजुएट।''

वे उन लोगों पर कटाक्ष करते हैं जो कोट–पतलून पहनकर स्वयं को ''सभ्य'' मानते थे, लेकिन भीतर से नैतिक रूप से खोखले थे।

सदा रहे जो सबके साथ, दुख देवे जो हरदम हाथ।
बड़ी बुराई है उसकी तेज,क्यों सखि साजन? नहिं सखि ''बदमाश''।

ब्रिटिश शासन और प्रशासनिक भ्रष्टाचार पर चोट

ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों और भारतीय संसाधनों की लूट को भारतेन्दु ने मुकरियों के माध्यम से जन–जन तक पहुँचाया। उनकी मुकरियाँ यह स्पष्ट करती थीं कि ''अंगरेजी राज'' भारतीय जनता के लिए किस प्रकार अभिशाप सिद्ध हो रहा है।

''भीतर–भीतर सब रस चूसै,हँसि–हँसि के तन–मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज,क्यों सखी साजन? नहिं सखी, अँगरेज।''

यह मुकरी भारत के औपनिवेशिक शोषण का सबसे सटीक दस्तावेज़ है। ''भीतर–भीतर रस चूसना'' ब्रिटिश आर्थिक नीतियों (धन का निष्कासन) का सटीक बिम्ब है। वे कहते हैं कि ये ऊपर से हँसते–बोलते हैं और शिष्ट दिखते हैं, लेकिन भीतर–भीतर भारत का धन–संपदा चूस रहे हैं। वे बाहर से बहुत तेज और सभ्य हैं, लेकिन वास्तव में वे साजन नहीं, ''अँग्रेज'' हैं। यहाँ ''साजन'' के नाम पर ''अँगरेज'' का नामोल्लेख करना भारतेन्दु के साहस और राजनीतिक चेतना का प्रमाण है।

राजभक्ति के आवरण में राष्ट्रप्रेम

भारतेन्दु के युग में खुलकर विद्रोह करना कठिन था इसलिए, वे अक्सर राजभक्ति का मुखौटा पहनकर व्यवस्था की कमियों को उजागर करते थे। उनकी मुकरियाँ उन सरकारी अधिकारियों और कानूनों पर तंज कसती थीं जो जनता का शोषण करते थे।

''नई नई नित तान सुनावै, अपने जाल में जगत फँसावै।
नित नित हमैं करैं बल–सून, क्यों सखि साजन, नहिं सखि कानून।''

''रूप दिखावत सरबस लूटै, फँदे में जो पड़ै न छूटै।
कपट कटारी जिय में हूलिस, क्यों सखि साजन, नहिं सखि पूलिस।''

''नित्य नया कानून बनावै,गरीबों का सब धन खावै।
अदालत में जब करे पुकार,क्यों सखी साजन? नहिं सखी, सरकार।''

यहाँ कानून और अदालत के माध्यम से होने वाले शोषण को ''सरकार'' से जोड़कर, भारतेन्दु ने उस समय की न्याय–व्यवस्था की पोल खोल दी थी। यह मुकरी शासन की विफलता को दर्शाती है।

स्वदेशी चेतना और राष्ट्रीय स्वाभिमान

भारतेन्दु युग ''स्वदेशी'' चेतना का उदय काल था। उन्होंने अंग्रेजी वस्तुओं की चमक–धमक और उससे होने वाली आर्थिक हानि को अपनी मुकरियों के माध्यम से जनता के समक्ष रखा। भारत को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए भारतेन्दु ने ''स्वदेशी'' का नारा दिया। उनकी मुकरियाँ लोगों को विदेशी वस्तुओं के त्याग और स्वदेशी अपनाने के लिए प्रेरित करती थीं।

''आवै मेल जो करे लड़ाई, पीछे तजि दे दे ततछिन जाई।
पर उपकार करै नहिं कोई,क्यों सखि साजन? नहिं, अंगरेजी वस्तु सोई।''

इस मुकरी में विदेशी वस्तुओं की क्षणभंगुरता और उनके प्रति भारतीयों के व्यर्थ आकर्षण पर चोट की गई है। उन्होंने मुकरी को आर्थिक राष्ट्रवाद के प्रचार का माध्यम बना लिया था।

भारतेन्दु की मुकरियों की संरचनात्मक विशेषताएँ

भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने मुकरी विधा को पुनः प्रतिष्ठित करते समय उसकी आधारभूत संरचना को तो बनाए रखा, किंतु उसमें ऐसे नए तत्व जोड़े जिसने इसे ''लोक–कला'' से उठाकर ''साहित्यिक विधा'' के रूप में परिष्कृत कर दिया। भारतेन्दु की मुकरियों की संरचनात्मक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

क. **सखी–संवाद शैली का पुनरुद्धार:** भारतेन्दु की मुकरियों की सबसे प्रमुख विशेषता ''संवादधर्मी'' होना है। उन्होंने खुसरो की तर्ज पर ही ''सखी–संवाद'' की शैली को अपनाया है। इसमें एक सखी प्रश्न करती है या किसी वस्तु का वर्णन करती है, और दूसरी सखी (या वक्ता स्वयं) उत्तर देती है। इस शैली ने मुकरी में एक प्रकार की ''नाटकीयता'' उत्पन्न कर दी है। पाठक को ऐसा प्रतीत होता है कि वह स्वयं उस संवाद का हिस्सा है, जिससे विषय की गंभीरता के बावजूद संप्रेषणीयता बनी रहती है।

ख. **भाषा का समन्वय (खड़ी बोली और ब्रज का संगम):** भारतेन्दु काल हिंदी भाषा के संक्रमण का काल था। भारतेन्दु ने मुकरियों में ब्रजभाषा की कोमलता और खड़ी बोली की स्पष्टता का अद्‌भुत सामंजस्य स्थापित किया है। जहाँ मुकरी का वर्णनात्मक हिस्सा ब्रज की रसानुभूति कराता है, वहीं अंतिम पंक्ति में जहाँ ''मुकरने'' की प्रक्रिया होती है, वहाँ खड़ी बोली का प्रहार अत्यंत धारदार होता है। यह भाषा–मिश्रण आम जनता के लिए समझने में अत्यंत सहज और रुचिकर था।

ग. **छंद और गेयता:** मुकरी एक छंदबद्ध विधा है, जिसे भारतेन्दु ने गेयता के साथ पिरोया। उन्होंने चार पंक्तियों के एक निश्चित खाँचे का प्रयोग किया है। पहली तीन पंक्तियाँ जिज्ञासा जगाने वाली होती हैं, और चौथी पंक्ति में सत्य का उद्‌घाटन होता है। यह संरचना पाठक के मस्तिष्क में ''कौतुक'' बनाए रखने के लिए वैज्ञानिक रूप से अत्यंत प्रभावी है। लयबद्धता के कारण ही ये मुकरियाँ मुद्रित माध्यमों के साथ–साथ मौखिक रूप से भी समाज में बहुत तेजी से प्रसारित हुईं।

घ. **मुकरने की कला और व्यंग्यात्मक प्रहार:** भारतेन्दु की मुकरियों की संरचना का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा ''मुकरना'' है। यह केवल एक भाषाई खेल नहीं, बल्कि एक ''व्यंग्य तकनीक'' है। कवि पहले ऐसी पंक्तियाँ रचता है कि पाठक को लगता है कि चर्चा किसी प्रियतम या सामान्य वस्तु की हो रही है, किंतु अंतिम क्षण में जब वह ''मुकरता'' है, तो वह एक तीखा सामाजिक या राजनीतिक सत्य सामने आता है। यह ''शॉक–एलिमेंट'' ही भारतेन्दु की मुकरियों को खुसरो की मुकरियों से भिन्न और अधिक प्रभावशाली बनाता है।

च. **संक्षिप्तता और बिम्बविधान:** भारतेन्दु ने अपनी मुकरियों में बहुत कम शब्दों में बड़ी बात कहने की कला का प्रदर्शन किया है। वे शब्दों के चयन में ''मितव्ययी'' हैं। उनकी मुकरियों में बिम्ब इतने स्पष्ट हैं कि पढ़ते ही एक चित्र आँखों के सामने तैरने लगता है। चाहे वह रिश्वत का चित्रण हो, या ब्रिटिश शासन की चालाकी का उन्होंने वस्तुओं को मानवोचित रूपक के रूप में प्रस्तुत कर मुकरी को एक नया आयाम दिया है। भारतेन्दु ने मुकरी को केवल एक ''लोक–प्रहेलिका'' के रूप में नहीं, बल्कि ''व्यंग्य के एक संक्षिप्त और प्रहारक रूप'' के रूप में पुनर्गठित किया। उनकी संरचनात्मक कुशलता ही वह कारण है जिसके चलते उनकी मुकरियाँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी कि 19वीं शताब्दी में थीं।

निष्कर्ष

साहित्य का इतिहास केवल महान कृतियों का संकलन नहीं होता, बल्कि उन छोटी–छोटी विधाओं का भी होता है जो जनता के कंठ और मानस में रची–बसी होती हैं। भारतेन्दु हरिश्चंद्र की मुकरियाँ इस सत्य का जीवंत प्रमाण हैं कि साहित्य का ''कलेवर'' भले ही लघु हो, किंतु यदि उसमें ''युग–चेतना'' का प्राण हो, तो वह कालजयी बन जाता है। अमीर खुसरो द्वारा लोक–कंठ में स्थापित मुकरी ने भारतेन्दु युग में ''नवजागरण'' के अंकुर को सींचा। भारतेन्दु ने ''मुकरियाँ'' लिखकर यह सिद्ध किया कि एक सजग लेखक सत्ता के गलियारों में बैठे शोषकों को हँसाते–हँसाते आईना दिखा सकता है। मुकरी की हँसी–मजाक वाली शैली एक ''कवच'' की तरह काम करती थी, जिससे भारतेन्दु सरकारी दमन से सुरक्षित रहते थे, जबकि उसका अर्थ एक ''तलवार'' की तरह व्यवस्था पर प्रहार करता था।

भारतेन्दु की दुनिया ''व्यापक'' है। वे रसोई, घर और खेत– खलिहानों से बाहर निकलकर अदालतों, सरकारी दफ्तरों, रिश्वतखोरी के अड्डों और विदेशी दासता के केंद्रों तक पहुँचते हैं। उनका ''साजन'' अब घर का व्यक्ति नहीं, बल्कि शासन की भ्रष्ट व्यवस्था है। उन्होंने मुकरी को मनोरंजन के गलियारे से निकालकर ''समाज–सुधार की पाठशाला'' में स्थापित किया।

खुसरो का व्यंग्य बहुत कोमल और ''विनोदपूर्ण'' है। वहाँ किसी के प्रति घृणा या आक्रोश नहीं है। वह केवल शब्दों के अर्थ–विस्तार का खेल है, परन्तु भारतेन्दु का व्यंग्य ''तीखा'' और ''व्यवस्था–विरोधी'' है। वे जहाँ ''मुकरते'' हैं, वहाँ अक्सर एक ''सत्य'' को नग्न रूप में सामने ले आते हैं। उनका व्यंग्य समाज की रुग्णताओं को ठीक करने के लिए दी जाने वाली ''कड़वी औषधि'' के समान है। खुसरो के लिए सखी–संवाद एक ''कलात्मक उपकरण'' है, जिससे मुकरी में नाटकीयता आती है।

भारतेन्दु के लिए सखी–संवाद एक ''जन–माध्यम'' है। वे जानते थे कि भारतीय समाज में ''सखी–संवाद'' की परंपरा बहुत पुरानी है, इसलिए इस शैली में कही गई बात को लोग जल्दी ग्रहण करेंगे और उसे लोक–भाषा के रूप में आगे बढ़ाएँगे।

खुसरो ने मुकरी को ''जन्म'' दिया और उसे जन–कंठ का आभूषण बनाया, तो भारतेन्दु ने उसे ''प्राण'' दिए और उसे समाज–सुधार का शस्त्र बनाया। यदि खुसरो की मुकरियाँ ''कौतुक की खिड़की'' हैं, तो भारतेन्दु की मुकरियाँ ''परिवर्तन का द्वार'' हैं। भारतेन्दु ने खुसरो के फॉर्म को अपनाकर यह सिद्ध कर दिया कि मुकरी जैसी लघु विधाएँ भी किसी बड़े कालजयी विमर्श को ढोने में पूरी तरह सक्षम हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ''नये जमाने की मुकरी'' में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने परंपरा से चली आ रही मुकरी विधा के साथ तीन बड़े प्रयोग कर उसका पुनरुद्धार किया:

1. **संवाद की सरलता:** उन्होंने जटिल सामाजिक समस्याओं को ''सखी–संवाद'' में बांधकर आम अनपढ़ जनता के लिए भी समझने योग्य बना दिया।
2. **मनोवैज्ञानिक चोट:** मुकरी के अंत में ''मुकरने'' की प्रक्रिया पाठक को एक ''कैथार्सिस'' (मनोरेचन) प्रदान करती है। वह हँसते–हँसते अपनी कमियों पर विचार करने लगता है।
3. **साहसी अभिव्यक्ति:** ब्रिटिश शासनकाल में सीधे आलोचना करना जोखिम भरा था। मुकरी की ''विनोदी'' आड़ ने भारतेन्दु को वह सुरक्षा कवच प्रदान किया, जिसके पीछे से वे व्यवस्था पर तीखे वार कर सके।

अंततः यह स्पष्ट है कि भारतेन्दु की मुकरियों की राजनीतिक चेतना ''स्वच्छंद'' नहीं, बल्कि ''सुनियोजित'' थी। उन्होंने ''भारतेंदु मंडल'' के माध्यम से यह सुनिश्चित किया कि उनकी ये रचनाएँ जन–सभाओं, नुक्कड़ नाटकों और पत्र–पत्रिकाओं (जैसे– ''कविवचन सुधा'') के माध्यम से आम जनता तक पहुँचें। मुकरी की गेयता ने उसे गाँवों के चौपालों तक पहुँचाने में मदद की, जहाँ अनपढ़ किसान भी इन मुकरियों को सुनकर ब्रिटिश शासन के प्रति जागरूक हो सके। उनका उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि ''सामाजिक हस्तक्षेप'' था। वे पाठक को सोचने के साथ–साथ ''कार्य करने'' और ''विरोध करने'' के लिए भी प्रेरित करते थे।

संदर्भ सूची

1. ब्रजरत्नदास (सम्पादक) (2018) *भारतेन्दु ग्रंथावली.* नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, नवीन पुनर्मुद्रण 2018।
2. शुक्ल, रामचंद्र (2021) *हिंदी साहित्य का इतिहास.* नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. द्विवेदी, हजारी प्रसाद (2023) *हिंदी साहित्य का आदिकाल.* राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
4. उपाध्याय, कृष्णदेव (2015) *लोक–साहित्य की भूमिका.* साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद।
5. शर्मा, रामविलास (2022) *भारतेन्दु हरिश्चंद्र.* राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
6. प्रेमशंकर (2012) *हिंदी व्यंग्य का विकास.* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
7. शर्मा, हरवंश लाल (2019) *अमीर खुसरो: जीवन और कृतित्व.* राजपाल एंड संस, नयी दिल्ली।
8. नगेन्द्र (2020) *हिंदी साहित्य के आधुनिक प्रतिनिधि कवि.* नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली।
9. नगेन्द्र (सम्पादक) (1999) *हिंदी साहित्य का इतिहास.* मयूर पेपरबैक्स, नोएडा।
10. शर्मा, हेमन्त (सम्पादक) (1988) *भारतेन्दु समग्र.* हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।

****